उपमा

गुरू महिमा

गुरू गोबिन्द दोऊं खड़े काके लागूं पाय
बलिहारि गुरू आपने जिन गोबिन्द दियो मिलाय

इस दोहे के माध्यम से आप समझ गए होगें कि आज मेरे वक्तव्य का क्या विषय है– 'गुरू महिमा'। जैसा कि आप सबको विदित है कल सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन् का जन्मदिवस है जो पूरे राष्ट्र में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता हैं।

डॉ. राधाकृष्णन् बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होनें अपनी आजीविका अध्यापक के रूप में प्रारम्भ की। अपने गहन अध्ययन और सहज अभिव्यक्ति के कारण एक सफल अध्यापक कहलाए। अध्यापक के रूप में अपने शिष्यों के साथ इनके सम्बन्ध बहुत मधुर थे। वे हमेशा अपने शिष्यों को नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा दिया करते थे । इनके अनुसार शिक्षा के क्षेत्र में अध्यापक की अहम् भूमिका है। अध्यापक शिक्षा और बालक के मध्य रीढ़ की हड्डी के समान है। वह राष्ट्र का निर्माता है। एक अध्यापक हमेशा ज्ञान प्राप्त करने के लिए तत्पर रहता है। ज्ञान प्राप्ति से संतुष्ट नहीं होता। अपने ज्ञान में वृद्धि करने के लिए हमेशा अध्ययनशील रहता है जिससे अपने शिष्यों को ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित कर सकें । टैगोर ने बहुत सुन्दर शब्दों में कहा है–

"A lamp can never light another lamp unless it continues to burn its own flame"

इसी संदर्भ में महान् Professor Thomas ने अपने विचार कुछ इस रूप में प्रस्तुत किए – " I would like that my students should drink water from running stream, rather than the stagnant pool".

भारतीय संस्कृति में गुरू का बहुत महत्व रहा है। अगर माँ जन्म देने वाली ब्रह्मा है, पिता पालने वाले विष्णु तो गुरू बुराइयों को नष्ट करने वाले शिव है। गुरू ही विद्यार्थी का सच्चा मार्ग दर्शक है, जो उसे सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

अध्यापक के हाथ में बच्चा गीली मिट्टी के समान है वह जैसा रूप चाहे उसे प्रदान कर सकता है । गुरू ही शिक्षण संस्थाओं की आत्मा है। "The destiny of the country is being shaped in the classrooms of the school of any country."

जिस प्रकार कुम्हार मिट्टी की वस्तुओं का निर्माण करते समय उसे बाहर से चोट देकर उसके बिगड़े रूप को सुधारता है ओर साथ ही साथ अन्दर से हाथ का हारा देकर उसकी रक्षा करता है उसी प्रकार

अध्यापक विद्यार्थी को गलत मार्ग पर जाते देख डाँटता है पर उसकी भलाई भी चाहता है । इसलिए कहा गया है–

''गुरू कुम्हार शिप्य कुम्भ है, गढ़ि गढ़ि काढ़ै खोट
भीतर हाथ सम्हार दे, बाहर बाहे चोट''

जिस प्रकार माली पौधों की देखभाल करता है उसे पानी से सींचता है और जब पौधा मुरझा जाता है तो उसे बहुत दुःख होता है उसी प्रकार अध्यापक शिप्य को अपना ज्ञान देकर उसका विकास करता है पर जब विद्यार्थी गलत मार्ग पर जाता है तो उसे भी दुःख होता है।

गुरू के समान कोई संबंधी नहीं होता। वह सब संबन्धियों से बड़ा होता है । वह बच्चों के साथ हमेशा संपर्क बनाए रखता है। उनमें ज्ञान, प्यार व सहानुभूति उत्पन्न करता है। It is rightly said," knowledge may be gained from books but the love of knowledge is transmitted only by personal contact.".

शिप्य के चरित्र निर्माण में अध्यापक का बहुत बड़ा योगदान होता है । अध्यापक अपने शिप्यों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं और उनके व्यक्तित्व को सम्मान देता है। वह अपने आपको शिप्यों से उच्च नहीं समझता बल्कि मानवीय संबंधों की गहन सूझ–बूझ रखता है। उनको समझने के लिए अपने आपको उनके स्तर तक लाता है। अपने आपको शिप्य के स्थान पर रखकर उनके दृप्टिकोण से समस्याओं को समझने की कोशिश करता है और उनका समाधान करता है।

गुरू ही व्यक्ति के ज्ञान चक्षुओं को खोल सकता है और प्रभु के दर्शन प्राप्त करा सकता ।।

''माया दीपक नर पतंग, भ्रमि–भ्रमि महिं पडंत,

कहै कबीर गुरू ज्ञान तै, एक आध उवरत।''

कबीरदास जी के अनुसार बिना गुरू के हम परमात्मा को नहीं पहचान पाते जबकि परमात्मा हमारे अंदर ही निवास करता है।

''सतगुरू की महिमा अनन्त , अनन्त किया उपकार,
लोचन अनन्त उधारिया, अनंत दिसावन हार।''

अन्तः मैं यही कहूँगी कि गुरू के महत्त्व को समझते हुए हमें अपने गुरूओं को पूरा सम्मान देना चाहिए और उनके प्रति सच्ची श्रद्वा रखनी चाहिए। और इसी श्रद्धा के साथ यहाँ पर उपस्थित सभी विद्यार्थीगण और शिखकगण से मैं निवेदन करती हूँ कि आज आप मेरे साथ अपने–अपने गुरूओं को याद करते हुए उनके सम्मान में दो पंक्तियों का उच्चारण करें–

''गुरू बह्मा, गुरू विप्णु, गुरू देवो महेश्वरः
गुरू साक्षात् परं ब्रह्म, तस्मै श्री गुरवै नमः।